SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

चित्रा मुद्गल की गेंद कहानी में वृद्ध विमर्श

लक्षेश्वरी, पी–एचडी., हिंदी विभाग
किरोड़ीमल शासकीय कला एवं विज्ञान, महाविद्यालय, रायगढ़, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
लक्षेश्वरी, पी–एचडी.
E-mail : laksheshwarikurre@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 18/07/2025
Revised on : 19/09/2025
Accepted on : 28/09/2025
Overall Similarity : 00% on 20/09/2025

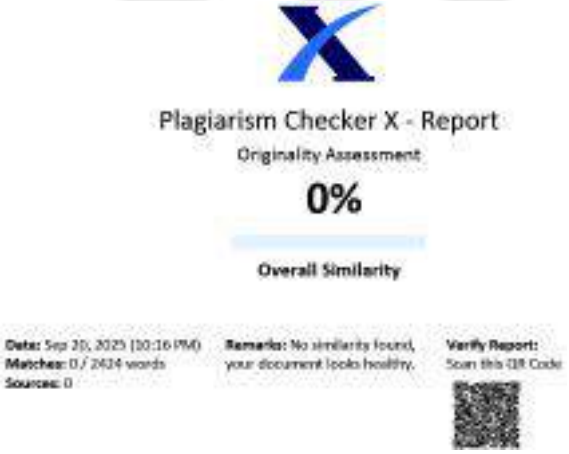

शोध सार

चित्रा मुद्गल आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य की वरिष्ठ एवं बहुचर्चित लेखिका है। इनकी रचनाओं के केन्द्र में नारी जीवन और मानवीय संवेदनाएँ रही हैं। उनकी रचना कर्म में अनुभव–अनुभूति का सृजनात्मक नुकीलापन, मर्मभेदी और संवेदनशीलता को जागृत करने में सक्षम है। बदलते समय के साथ साहित्य जगत में कई विमर्शों ने प्रवेश किया जैसे नारी विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, बाल विमर्श, किन्नर विमर्श, किसान विमर्श, विकलांग विमर्श आदि। ये सभी विमर्शों ने एक नवीन चेतना को जागृत किया। वृद्ध विमर्श हिन्दी कथा साहित्य के क्षेत्र में साहित्य लेखन की विषयवस्तु के साथ सामाजिक भावात्मकता एवं संवेदना है, जिसे साहित्यकार अपनी रचनाओं के द्वारा यथार्थ रुप में प्रस्तुत करता है। मुद्गल की गेन्द कहानी वृद्ध विमर्श को एक नवीन दृष्टिकोण के साथ समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का कार्य करती है। आधुनिक जीवन शैली के कारण पारिवारिक एवं भावनात्मक अलगाव और आपसी प्रेम व्यवहार में आने वाली कमी के साथ अपनी जिम्मेदारियों से मुंह मोड़ते युवाओं के स्वार्थपूर्ण कार्य शैली को लेखिका ने संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है। मुद्गल ने गेन्द कहानी में 'गेन्द' को भावनात्मक संबंध और स्नेह का प्रतीक के रुप में व्यक्त किया है। कहानी का मुख्य पात्र सचदेवा है और बिल्लू एक बालक पात्र के रुप में उपस्थित है। बिल्लू अपनी मां की नौकरी के कारण घर में कैद रहने के लिए विवश है। सचदेवा अपने जीवन से दूर चली गयी गेन्द रुपी भावनात्मक संतुष्टि को ढूंढ़ने की कोशिश में लगा हुए है। सेवानिवृत सचदेवा मानसिक और भावात्मक साहचर्य के अभाव के कारण पीड़ित है और अपने पुत्र के स्वार्थपूर्ण व्यवहार के कारण परिवार से दूर रहने के लिए विवश है। सचदेवा और बच्चा दोनों ही भावनात्मक अलगाव और एकाकीपन के कारण एक–दूसरे के साथ भावनात्मक रुप से जुड़ जाते हैं। वर्तमान समय में

भौतिकता के चकाचौंध में डूबते युवा पीढ़ी के द्वारा वृद्धों के प्रति किये जाने वाली संवेदनहीनता को लेखिका ने गेन्द कहानी में यथार्थ रुप में प्रस्तुत किया है।

मुख्य शब्द

चित्रा मुद्गल, गेन्द, वृद्ध विमर्श, संवेदनाएँ.

प्रस्तावना

हिन्दी कथा साहित्य जगत में वृद्ध विमर्श पर कई रचनाकारों ने अपनी लेखनी चलाई हैं। मुदगल ने अपनी रचनाओं में समाज की हर प्रकार की विसंगतियों को ध्वनित करने के साथ ही समस्याओं का समाधान अपने पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत करने की भरसक कोशिश करती हैं। गेन्द कहानी वृद्धों की समस्या को केन्द्र में रख कर लिखी गयी है जो आज के युवा वर्गों के द्वारा किये जा रहे वृद्धों के प्रति असंवेदनशीलता को व्यक्त करती है। गेन्द कहानी का मुख्य पात्र सचदेवा है। इस कहानी में सचदेवा की कथा व्यथा के माध्यम से तमामा वृद्धों की जीवन संध्या का सजीव चित्रण लेखिका ने यथार्थ रुप में किया है। लेखिका ने बुढ़ापे का दर्द, घर में उपेक्षित व्यवहार के शिकार, तथा दर–दर की ठोकर खाने के लिए, उपेक्षित और तिरस्कृत जीवन जीने के लिए बाध्य हो रहे वृद्धों को परिवारजन वृद्धाश्रम में छोड़ आते है और कभी उनकी ओर पलटकर नहीं देखतें है।

सचदेवा कहानी का मुख्य पात्र है और मधुमेह बीमारी का शिकार है। उनके पुत्र (विनय) और बहु (मारग्रेट) दोनों डॉक्टर हैं और लंदन में रहते हैं। आर्थिक रुप से सम्पन्न होने के बावजूद भी विनय अपने पिता की ओर ध्यान नहीं देता है। सचदेवा की श्रवण क्षमता भी मधुमेह बीमारी के कारण कमजोर हो गई है। इलाज के लिए बार–बार पैसे मांगने पर भी विनय कोई न कोई बहाना कर देता है। पिता द्वारा बराबर पत्र व्यवहार करने पर विनय फोन पर कहता है कि आश्रमवालों की सहायता से अपना इलाज करवा लें। ''मधुमेह का सीधा आक्रमण उनकी श्रवण शक्ति पर हुआ है। सात–आठ महीने से ऊपर हो रहे होंगे। विनय को अपनी परेशानी लिख भेजी थी।'' विनय को अपने पिता के इलाज की न कोई चिन्ता थी और न ही उनसे कोई भावनात्मक संबंध ही था। वह भौतिकवादी चकाचौंध में पूरी तरह से डूब गया था। विनय का व्यवहार पिता के प्रति भावनात्मक एवं संवेदनशील नहीं होने के कारण उसकी पत्नी मारग्रेट का व्यवहार भी अच्छा नहीं रहता है। पुत्र के व्यवहार से क्षुब्ध पिता के फोन आने पर मारग्रेट झुंझला जाती है –''फोन पर मिली मारग्रेट बोली कि वह उनकी बात समझ नहीं पा रही। विनय घर पर नहीं है। मेनचेस्टर गया हुआ है। मारग्रेट के सर्वथा असंबंधित भाव ने उन्हें क्षुब्ध कर दिया। छलनी हो उठे। बहू के बात–बर्ताव का कोई तरीका है यह? फोन लगभग पटक दिया उन्होंने। कुछ और हो नहीं सकता था।'' माता–पिता अपने सपने, अपने अरमान सभी का तिलांजलि देकर अपने बच्चों का भविष्य संवारने में लगे रहते है और यही बच्चे आगे चलकर अपने पैरों में खड़े होकर अपने स्वार्थ साधने में लग जाते हैं। अपने माता–पिता के त्याग को विस्मृत कर उन्हें घुट–घुट कर जीने, तड़पने, सिसकने के लिए वृद्धाश्रम में छोड़ कर आ जाते हैं या अपमानित कर घर से निकाल देते हैं। बुजुर्गों की स्थिति के सन्दर्भ में लेखिका क्षमा शर्मा लिखती हैं कि ''अपनों द्वारा ठुकराए जाने का जो मलाल होता है, उसका क्या कोई इलाज है? उस अकेलेपन और अपमान के अहसास का क्या जो उनके करीबी जन उन्हें कराते हैं? वे बार–बार अहसास दिलाते हैं कि उनकी जरुरत अब घर में तो क्या इस धरती पर ही नहीं रही। उन्होंने जिनके लिए अपनी उम्र और अपने सारे संसाधन लगा दिए, वे ही दो जून की रोटी के लिए दुत्कारते हैं।'' आधुनिक जीवन शैली के कारण परम्परागत जीवन मूल्य, मानवीय भावनाएं एवं संवेदनाएं धीरे–धीरे खोते जा रहे हैं।

बुढ़ापे में व्यक्ति अकेला, असहाय और निर्बल हो जाता है। उनकी कार्य करने की क्षमता धीरे–धीरे क्षीण हो जाने के कारण अपने दैनिक कार्यों और भरण पोषण के लिए अपने संतानों या परिवार के अन्य सदस्यों पर निर्भर रहना पड़ता है। वर्तमान समय में वृद्धों को केन्द्र में रखकर साहित्य सृजन किया जा रहा है। वृद्ध समस्या वर्तमान समय में एक सामाजिक समस्या के रुप में हमारे सामने खड़ी है। जीवन की संध्यावेला में जब वृद्धों को अपने और अपने परिवार की सबसे अधिक आवश्यकता होती है तब परिवार वाले उन्हें बोझ समझकर अलग कर देते हैं या फिर

वृद्धाश्रम में छोड़ आते हैं और अपनी जिम्मेदारियों से भाग खड़े होते हैं। पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी वृद्धावस्था के संबंध कहते हैं कि ''सचमुच अब इस सत्य में कोई संदेह नहीं रहा कि मैं वृद्ध हूँ। मेरे जीवन का संध्या काल समीप आ गया है। मुझे यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि शरीर में अब वह शक्ति नहीं है, नेत्रों में वह ज्योति नहीं है, मन में वह उमंग नहीं है, वह स्फूर्ति नहीं है, वह चाह नहीं है।''

आधुनिकीकरण भूमंडलीकरण और सामाजिक परिवर्तन के दौर में भारतीय समाज में वृद्धों की बदलती स्थिति और वृद्धों की सामाजिक समस्याओं का लेखिका ने कहानी में सटिक विवेचन किया है। समाज में वृद्धों के सामने शारीरिक एवं मानसिक तनाव, बेगानेपन का भाव, आर्थिक असमर्थता, परिवार से अलगााव तथा दो या तीन पीढ़ियों के मध्य मानसिक टकराहट आदि समस्याएं उभर कर आ रही है। विनय एवं मारग्रेट अपनी भौतिकवादी विचारधारा के कारण ही सचदेवा की समस्या को नजर अन्दाज कर उन्हें मानसिक एवं शारीरिक कष्ट सहने के लिए वृद्धाश्रम में छोड़ दिए है। सचदेवा का भरापूरा परिवार होने के बावजूद भी बेगानेपन से जूझ रहा है, अपनों के प्यार के लिए तरस रहा है तभी तो सचदेवा को अपनी पोती (सुवीना) से बात न कर पाने का मलाल हफ्तों कोंचता रहा है। बहुत दिनों तक इन्तजार करने के पश्चात् भी पुत्र के द्वारा पैसे नहीं भेजे जाने पर सचदेवा ने पुनः पत्र लिखा जिसके जवाब में विनय ने फोन कर के कहा कि–''एक पेचीदे काम में उलझा हुआ था इसलिए उन्हें रुपये नहीं भेज पाया। अगले महीने हैरी से एक भारतीय मित्र आ रहे हैं। घर उनका लाजपत नगर में है। फोन नंबर लिख लें उनके घर का। उनके हाथों पौंड्स भेज रहा हूँ। रुपए या तो वे स्वयं आश्रम पहुंचा जाएंगे या किसी के हाथों भेज देंगे।'' जरुरतमंद पिता माह के शुरू होते ही डॉ. मनीष कुशवाहा के घर फोन करना षुरू कर देते है तो नौकरों से पता चलता है कि वे अब तक भारत नहीं पहुंचे हैं। एक दिन अचानक डॉ. मनीष कुशवाहा का फोन आता है और वे सचदेवा से बहुत ही आत्मीयता से उनका हालचाल पुछते हैं और विनय के पास लंदन जाने की बात कहते हैं पर पैसे की बात नहीं करते हैं। समस्याओं से तंग आ चुके और अर्थिक असमर्थता से परेषांन सचदेवा अत्यंत मजबूर होकर झिझकते हुए खुद ही पूछते हैं कि ''बेटा विनय ने तुम्हारे हाथों इलाज के लिए कुछ रुपए भेजने को कहा था।'' सचदेवा अपने पुत्र के इस प्रकार के व्यवहार से बहुत दुखी और लज्जीत भी हुए। लेखिका ने कहानी में सचदेवा को वृद्धों के प्रतिनिधित्व करने वाले नायक के तौर पर चित्रित किया है, जो कई प्रकार के समस्याओं से जूझ रहे है। वृद्धों के अकेलापन, घुटन और अपने संतानों के प्रेम की चाहत में तडपता हुआ उनकी हृदयविदारक स्थिति के संबंध में ममता कालिया कहती हैं–''यह सब कामयाब संतानों के मां–बाप थे। हर एक के चेहरे पर भय और आशंका के साए थे। बच्चों की सफलता इनके जीवन में सन्नाटा बुन रही थी।'' आधुनिक समय में पारिवारिक संरचनाओं में आ रहे परिवर्तन खासकर संयुक्त परिवारों के विघटन और एकल परिवार के बढ़ते चलन के परिणामस्वरुप वृद्धों की पारिवारिक और सामाजिक स्थिति में काफी बदलाव आया है और निरंतर बदलाव आता जा रहा है।

बुढ़पा जिसे आमतौर पर निष्क्रियता, शिथिलता की शारीरिक दशा समझ कर बहुत काम की चीज नहीं समझा जाता, बचपन से लेकर जवानी तक के जीवनानुभवों का प्रकाश पुंज होता है जिसके आलोक में युवा पीढ़ी अपने वर्तमान को संवारते हुए भविष्य का श्रृंगार कर सकती है, परन्तु नवीन पीढ़ी के लोग अपनी आधुनिक एवं भौतिकवादी विचारधारा के कारण बड़े बुजुर्गों को बोझ और उनके विचार एवं परामर्श को किसी कार्य के योग्य न समझ कर उनकी अवहेलना कर जाते हैं। इस संदर्भ में कमलेश्वर लिखते है कि ''और बदलते हुए यथार्थ के स्तर पर यदि हम देखें तो नई यानीं समकालीन कहानी में एक ओर वे पात्र जो अपने प्रागढ़ भारतीय संस्कार लिए जीवन के दृश्यपट से विलीन हो रहे हैं यानी पिता, बुजुर्ग और उम्र के साथ मिटते हुए लोग–'आद्रा' की मां, 'गुलरा के बाबा' के बाबा, 'चीफ की दावत' की माता जी, 'बिरादरी बाहर' के बाप, 'वापसी' के पिता या 'पिता' के पिता और 'रक्तचाप' की मां।'' भूमंडलीकरण के जाल में फंस कर अधिकांश लोग सामाजिक संबंधों को अनावश्यक समझकर दूरी बना लेते हैं। विनय भी भूमंडलीकरण के जाल में फंस कर अपने पिता का त्याग कर दिया है और लंदन में अपने परिवार के साथ सुख–सुविधापूर्वक जीवन जी रहा है। स्वयं पिता के प्रेम स्नेह और आशीर्वाद से वंचित तो हो गया है साथ ही अपनी पुत्री सुवीना को भी दादा के प्रेम से दूर कर रिश्तों की मीठास को अपने जीवन से काट फेंका है। ये कैसी विडबना है कि पूरे परिवार को बरगद की तरह छांव प्रदान करने वाला व्यक्ति वृद्धावस्था में अकेला असहाय और बहिस्कृत

जीवन जीने के लिए विवश हो जाता है। सचदेवा जीवन के अंतिम पड़ाव में अपनों से कुछ वक्त पाने की चाहत में पत्र लिखता है और फोन पर बात करने की कोशिश करता रहता है पर वह अपनापन नही मिलता है जिसकी वह कामना करता रहता है। आत्मीय संबंधों के खोखलेपन एवं मानवीय संबंधों के कटुता का चित्रण लेखिका ने किया है।

सचदेवा वृद्धाश्रम में अकेलेपन और बीमारी से जूझते हुए अपने गुजरे हुए कल को याद करता रहता है। उसे अपनी मृत पत्नी (राजो) की बहुत याद आती है। राजो के ख्यालों में खोये सोचते हैं कि ''राजो ज़िन्दा थी तो उन्हें कभी अपनी फ़िक्र नहीं करनी पड़ी। नित नए नुस्ख़े घोंट–घांटकर पिलाती रहती। करेले का रस, मेथी का पानी, जामुन की गुठली की फंकी...और न जाने क्या–क्या?'' सचदेवा वृद्धाश्रम में अकेलेपन से जूझते हुए और राजो के साथ गुजारे दिनों को यादकर के बहुत हताश और निराश हो जाता है।

हताशा और निराशा भरे जीवन में वृद्धाश्रम से बाहर घर में कैद बिल्लू नामक एक बच्चे से सचदेवा की मित्रता हो जाती है जिससे उसे प्रेम और सहानुभूति मिल जाती है और दोनों ही एक–दूसरे के साथ भावनात्मक रुप से जुड़ते चले जाते हैं। सचदेवा को बिल्लू में अपनी पोती की अक्ष दिखाई देने लगता है और वह उसकी हर इच्छा अनिच्छा का ध्यान रखते हुए दादाजी पुकारने के लिए कहता है। वृद्धाश्रम से चटर्जी दी की शवयात्रा जब निकाली जाती है तो अंतिम विदाई देने के लिए सचदेवा भी बस में बैठ जाता है पर अगले ही क्षण बिल्लू के साथ किये वादे याद कर के वह बस के ड्राइवर को आवाज देते हुए कहता है '' ..... अचानक सचदेवा जी भड़भड़ाये से अपनी सीट से उठ खड़े हुए। हाथ उठा ड्राइवर को पुकारते हुए कहने लगे–ड्राइवर साहब, जरा गाड़ी रोकना भैया। रोकना तो. ...''। सचदेवा अपने जीवनकाल के संध्यावेला में बिल्लू से प्रेम और अपनापन पाने की चाहत में शवयात्रा पर भी शामिल नहीं होता है और बिल्लू के लिए उसकी पसंद का क्रिकेट किट खरीदनें अट्टा मार्केट चला जाता है।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में भैतिक सुख सुविधा के मोह में फंसता हुआ व्यक्ति, व्यक्तिवाद और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के कारण पारिवारिक संबंधों से दूरियाँ बढ़ाती जा रही है। संतान अपनी जिम्मेदारियों से भाग खड़े हो रहे हैं, उन्हें अपने वृद्ध माता पिता की किसी भी प्रकार की कोई चिन्ता नहीं रहती है। आज अधिकांश परिवारों में बुजुर्ग उपेक्षित जीवन जीने के लिए बाध्य हो रहे हैं। सचदेवा भी भरे–पूरे परिवार के रहने के बावजूद भी अकेलापन से जूझता हुआ स्नेह और प्रेम के लिए तड़पता हुआ वृद्धाश्रम में अपने जीवन के अंतिम क्षणों को जीने के लिए बाध्य हो गया है। लेखिका चित्रा मुद्गल गेन्द कहानी के माध्यम से समाज को बताने का प्रयास कर रही हैं कि भौतिकवादी परिवेश के मैदान में न जाने कहाँ पारिवारिक स्नेह और भावनात्मक साहचर्य की गेन्द खो गई है, जिसे खोजने का प्रयास हर किसी को करना पड़ रहा है। वृद्धावस्था में वृद्धों को भावनात्मक सहारे और अधिक देखरेख की आवश्यकता होती है लेकिन वर्तमान समय में बुजुर्गों के प्रति असंवेदनशीलता और उपेक्षा दिन–प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है।

संदर्भ सूची

1. अनिता (2020) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य में वृद्ध विमर्शः एक अनुशीलन, पी–एच. डी शोध ग्रन्थ, पृ. 09।
2. कमलेश्वर (2005) *नई कहानी की भूमिका,* राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. 19।
3. ख़ान, फ़ीरोज एम. (2021) वृद्ध जीवन की कहानियाँ (भारतीय एवं प्रवासी लेखक), विकास प्रकाशन, कानपुर, पृ. 11, 12, 13।
4. गुप्ता संजय संपा (2017) रविवारीय अंतराल के अंतर्गत अपनों की अनदेखी का दर्द, क्षमा शर्मा, दैनिक जागरण राष्ट्रीय संस्करण, दैनिक हिन्दी समाचार पत्र, नई दिल्ली, 11 जून 2017।
5. मेहरा, दिलीप (2021) *हिन्दी कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श,* उत्कर्श पब्लिशर्स, कानपुर, पृ. 54।

****